मुक्ति मार्ग

मेरे प्रिय मित्र,

मैं आप से एक जीवन बदल देने वाली और सबसे महत्वपूर्ण बात बताने की आशा करता हूं। जिस के बारे में शायद ही आप ने कभी सुना या सोचा होगा, या शायद किसी ने आप को बताया होगा । और यह बात आपके दिमाग में भी नहीं आया होगा । कृपया मेरे लिए आप थोड़ा समय दे सकते हो ...

क्या आपने कभी सोचा है - "मैं कौन हूं ?", "मैं कहां से आया हूं ?", "इस दुनिया में मेरा उद्देश्य क्या है ?", "मैं इस धरती पर क्या कर रहा हूं ?", "अगर मैं अब मर जाऊं तो कहां जाऊंगा?" " ।

मनुष्य के हृदय में शून्यता, असन्तोष और दुःख का क्या कारण हो सकता है?"

यह सच है कि न तो पैसा, नौकरी, धन, न ही सुंदरता मानवता को खुशी, शांति और आराम की सच्ची भावना प्रदान करती है। आपके अनुसार मनुष्य की वास्तविक और सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता क्या है? विभिन्न तरीकों और साधनों का सहारा लेने के बाद भी मनुष्य अपने दिल के खालीपन को भरने, अपने असंतोषों से निपटने और अपने दुखों पर काबू पाने में असमर्थ क्यों है? मनुष्य, खुशी की तलाश में, विभिन्न प्रकार के व्यसनों का भी शिकार हो जाता है जो उसके शरीर और आत्मा को और भी नष्ट कर देते हैं ।

अपनी माँ के लिए रोते रोते बच्चे को किसी भी खिलौने से शांत नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार, पानी के बिना मर रही मछली के लिए भी पानी की जगह कोई नहीं ले सकता। उसी तरह, एक मनुष्य जो वास्तव में परमेश्वर की सांस से बनी आत्मा है, भौतिक प्रावधानों से अपनी आध्यात्मिक प्यास और हताशा को नहीं बुझा सकता। मनुष्य को परमेश्वर की आवश्यकता है!!

मृत्यु का सामना करने का डर हर किसी में आम है; इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह कितना अमीर, कितना गरीब, कितना बुद्धिमान, कितना भोला, कितना मजबूत या कितना

कमजोर है। कहा जाता है - "यदि मनुष्य सारा संसार प्राप्त कर ले और अपने प्राण खो दे तो उसे क्या लाभ होगा ? " इंसान के लिए मौत हमेशा से एक रहस्य और पहेली रही है। इससे प्रश्न उठता है - मृत्यु के बाद मनुष्य का क्या होता है? मृत्यु और मृत्यु के बाद के जीवन पर केन्द्रित कई सिद्धांतों का प्रयास किया गया है। इनमें से कौन सा सिद्धांत वास्तविक है? इन सभी प्रयासों से यह स्पष्ट है कि प्रत्येक व्यक्ति मुक्ति/मोक्ष (आध्यात्मिक स्वतंत्रता) प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है ।

क्या मनुष्य का जीवन पानी की भाप के समान नहीं है? हम नहीं जानते हैं कि कब क्या होगा। इसलिए मरने से पहले हमें जीवन के कुछ महत्वपूर्ण और मूल्यवान सत्य जान लेना जरुरी है, मेरे दोस्त।

मनुष्य कौन है?

मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप और समानता के अनुसार बनाया हुवा एक आत्मा स्वरूपि और एक नैतिक प्राणी है। अपने अंतरात्मा के वजह से अच्छाई और बुराई का जानकारी रखने का विवेक मनुष्य को प्राप्त है। इसलिए, मनुष्य अपने द्वारा किये जाने वाले हर काम और बोलने वाले हर बात का जवाबदेह है। पशु-पक्षियों में न तो आत्मा, न विवेक, और न ही मनसाक्षी होती है। इसलिए, उनमें सही और गलत के बीच चयन करने की विवेकपूर्ण ज्ञान नहीं होता है और उनमें कोई नैतिकता नहीं है । इस कारण पशु-पक्षि शादी नहीं करते, फिर भी उन की अनैतिकता को पाप नहीं माना जाता है । पशु-पक्षी में मनसाक्षी नहीं होने के कारण वे कभी भी दैव चिंतन नही करते है। जब वे मरते हैं तो उनके प्राण और शरीर मिट्टी में मिल जाते हैं।

हम सड़क पर कई जानवरों को मरते देखते हैं लेकिन हमें उनकी परवाह नहीं होती है। वहीं दूसरी ओर अगर कोई आदमी मर जाता है, तो हम उन्हें नजर अंदाज नहीं करते, चाहे वाह कोई भी हो भले ही वह गरीब या भिखारी हो, हम अपना सम्मान और चिंता दिखाते हैं और उन्हें वैसेही नहीं छोड़ते है ना? मनुष्य, परमेश्वर की स्वरूप मे रहने वाला एक सर्वोत्तम और अद्वितीय स्रुष्टि है।

मनुष्य - दैव चिंतन :

चाहे दुनिया के किसी भी कोने में रहने पर भी हर आदमी किसी ना किसी धर्म का आचरण कर परमेश्वर का चिंतन करता है। मनुष्य मृत्यु के भय से प्रेरित होकर अपने पापों का प्रायश्चित के लिए और मुक्ति के लिए प्रयास करते रहता है।

इसी प्रयास में वाह अनेक प्रकार की पूजा-पाठ कर तीर्थस्थलों के दर्शन करते हुऐ अनेक धार्मिक और पुण्य कार्य भी करते रहता है । लेकिन इन सभी कार्यों के द्वारा मनुष्य को अपने पापों से रिहाई और मुक्ति प्राप्त करने का विश्वास और साहस है क्या?

मनुष्य - जन्मतः कर्मतः पापी

कोई भी धर्मी नहीं, एक भी नहीं ! कोई समझदार नहीं, एक भी नहीं ! कोई ऐसा नहीं, जो परमेश्वर को खोजता हो ।

हम सब बच्चों की नर्सरी कविता "जॉनी जॉनी जी पापा. चीनी खा रहे हैं? नहीं, पापा"जानते हैं। इस कविता मे जॉनी को चीनी चुराना और झूठ बोलना किसी ने भी नहीं सिखाया है ना, तो वह कहा से सीखा?

मनुष्य पाप करने के वजह से पापी नहीं बना, बल्कि वाह पापी इसलिए बना क्यू की वाह जन्म से ही पापी है। यदि कोई पाप करता है, तो वह पाप का गुलाम है। मनुष्य का हृदय सब से अधिक धोखेबाज है और घातक रोगग्रस्त है। उसे कौन समझ सकता है?

मनुष्य के हृदय से बुरे विचार, परस्त्रीगमन, चोरी, नर हत्या, व्यभिचार, लोभ, बुराइयां,निंदा,अहंभाव, और मूर्खता निकल कर मनुष्य को अपवित्र करते है। अदालत किसी व्यक्ति को चोर कहती है क्योंकि उसने चोरी किया है। लेकिन वास्तव मे उस व्यक्ति ने चोरी इसलिए किया क्योंकि उसके हृदय में ही जन्मतः चोरी करने की प्रवृत्ति है|

पाप का बोझ और उसकी सजा :

पाप ने मनुष्य को परमेश्वर से दूर कर दिया है। वही पाप मनुष्य और परमेश्वर के बीच विरोध पैदा किया है । वही पाप ने मनुष्य को धर्मी और पवित्र परमेश्वर के क्रोध का पात्र बना दिया है। हर पाप जो मनुष्य करता है वह वास्तव में परमेश्वर के विरुद्ध किया हुवा पाप है। पाप का बोझ सभी बोझों में सबसे अधिक है। मनुष्य इस पाप के दंड से बचने के लिए विभिन्न तरीके अपनाता है। "पाप का वेतन तो बस मृत्यु ही है"। "वह अनन्त नरक है"। यह नियति है कि मनुष्य केवल एक ही बार मरे फिर उसके बाद उसका महान निर्णय होगा। मनुष्य के मृत्यु के बाद, उसका शरीर उसी मिट्टी में मिल जाता है जिससे वह बना था, और उसकी आत्मा उसे बनाया हुवे परमेश्वर के सामने धर्मी न्याय के लिए खड़ा हो जायेगा।

क्या धर्म मनुष्य को बचा सकता है ? :

मनुष्य अपने पापों के बोझ से मुक्त होने के लिए, पाप से छुटकारा पाने के लिए, नरक से बचने के लिए, और मुक्ति अर्जित करने के लिए अनेक स्वधर्म कार्य, पुण्य कार्य, दान उपहार करते हुए अपने धर्म का पालन करता है। परन्तु वे क्रियाए मनुष्य को परमेश्वर के धर्मी न्याय नहीं बचा सकते है ।

उदाहरण के लिए: एक व्यक्ति अपने द्वारा किए गए अपराध के तहत बहुत कठोर दंड का पात्र बन प्रतिवादी के रूप में अदालत में पेश किया गया और वाह न्यायाधीश से विनती किया की मैंने बचपन से कई अच्छे काम किये हैं, चोरी नहीं की, कोई झूठ नहीं बोला, व्यभिचार नहीं किया, मैं ने बहुत नेक कार्य किए हैं, दान किया है, और कोई गलती नहीं किया, इसलिए आप मेरी इस एक अपराध को माफ करके रिहाई देदो कह कर विज्ञापन किए तो, क्या वह न्यायाधीश, उस अपराधी को उनके धर्मक्रियो को देख कर अब छोड़ देगा क्या? आप ही बताइए!

पाप नामक दलदल में फंसा हुआ मनुष्य खुद को बचा नहीं सकता। इसी प्रकार, ना धर्म, ना धर्म शास्त्र, अच्छी शिक्षाएँ और उपदेश पाप के दलदल मे फसे हुए मनुष्य की रक्षा नहीं कर सकता है। इसलिए मनुष्य को एक मुक्तिदाता, बचाव करने वाले एक सहारे की जरूरत है !!

परमेश्वर की मदद:

इस संसार में प्रत्येक मनुष्य पाप में ही पैदा होता है, पाप में ही जीता है, और पाप में ही मर जाता है। कोई धर्मी नहीं है, एक भी नहीं है । उन में से कोई अपने भाई को किसी भांति छुड़ा नहीं सकता है; और न परमेश्वर को उसके बदले प्रायश्चित्त में कुछ दे सकता है- क्योंकि उनके प्राण की छुड़ौती भारी है, वह अन्त तक कभी न चुका सकेंगे - कोई ऐसा नहीं जो सदैव जीवित रहे, और कब्र को न देखे |

एक अंधा व्यक्ति दूसरे अंधे का नेतृत्व नहीं कर सकता। इसी प्रकार, इस संसार के गुरु, शिक्षक, उपदेशक और महापुरुष, जो स्वयं पाप में पैदा हुए हैं, पाप में जीते हैं और पाप में ही मरते हैं, दूसरों को पाप के चंगुल से नहीं बचा सकते हैं। मनुष्य की मुक्ति और मुक्ति/ मोक्ष की कीमत इतनी अधिक है कि कोई भी इसका भुगतान नहीं कर सकता।

लेकिन, परमेश्वर जो प्रेमी, और दयालु हैं, उनके पास मनुष्य को पाप से छुड़ाने और उसे अनन्त नरक से बचाने के लिए शुरु से ही एक शाश्वत योजना थी। धार्मिकता और न्याय पर विराजमान परमेश्वर के लिए यह अनिवार्य है कि वह मनुष्य पर शासन करने वाले पाप की निंदा करके पाप पर अपने क्रोध को संतुष्ट करे ।

परमेश्वर को कोई धर्मी मनुष्य नहीं मिला जो सारी मानवता के पापों का बोझ उठा सके। कोई भी मनुष्य मानवजाति को पाप से छुटकारा दिलाने के लिए फिरौती की कीमत नहीं चुका सकता। तब परमेश्वर के लिए स्वयं मानव रूप धारण करना, पृथ्वी पर आना, पाप- मुक्त जीवन जीना और मनुष्य के पापों का बोझ अपने ऊपर लेना आवश्यक हो गया।

परमेश्वर

परमेश्वर कौन है? वह कैसा दिखता है? उसके गुण क्या हैं? हम उनकी दिव्य प्रकृति, शाश्वत शक्ति और अदृश्य गुणों को उनकी रचना (अनगिनत सितारों और विशाल ब्रह्मांड) के माध्यम से महसूस कर सकते हैं। परमेश्वर इस संपूर्ण ब्रह्मांड का निर्माता है। यह हमें बताता है कि रचयिता सृष्टि से भिन्न है। क्या परमेश्वर, जिसका सिंहासन सभी सिंहासनों में सबसे ऊंचा है और जिसे ब्रह्मांड में समाहित नहीं किया जा सकता, तो मानव के हाथों के द्वारा बनाए गए मंदिरों में रहने तक सीमित किया जा सकता है? अथवा क्या उसे मनुष्य के हाथों से बनी कोई वस्तु बनाया जा सकता है? क्या परमेश्वर आध्यात्मिक नहीं है?

क्या परमेश्वर को ऐसा नहीं होना चाहिए जिसमें जीवन हो, जो देख सकता हो, जो बात कर सकता हो और जो अपने बच्चों की प्रार्थनाएँ सुन सकता हो ? मनुष्य के लक्षण क्रोध, वासना, अहंकार और ईर्षा हैं। क्या परमेश्वर को मनुष्य के विपरीत वासना, क्रोध, अभिमान और ईर्षा से परे नहीं होना चाहिए, और इसके बजाय उसे धार्मिकता, पवित्रता, सच्चाई और प्रेम दिखाने वाला व्यक्ति नहीं होना चाहिए? क्या परमेश्वर को सर्वोच्च, संप्रभु, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और शाश्वत नहीं होना चाहिए- जो आरंभ और अंत है - जो स्वयं विद्यमान है।

इतना ही नहीं, प्रेमी और करुणामय परमेश्वर अपने बच्चों अर्थात इस मानवजाति के मुक्ति के लिए निश्चित रुप से, कुछ तो किया होगा! परमेश्वर एक ही है । जैसे शरीर का एक ही पिता होता है, उसी प्रकार हमारे आत्माओ का भी एक ही पिता है। जिसने हम सभी को बनाया है वही हमारा परमेश्वर है।

दिव्य मनुष्य - मुक्ति कार्य:

हर एक इंसान अपने अपराधो, गलतियों, और पापों के कारण मृत्यु के बंधन में बंधा है और नित्य नरक की आग के कुंड में चले जा रहा हैं। क्योंकि कोई भी पाप रहित पवित्र

मनुष्य नही है जो मनुष्यों के पापों का बोझ उठा कर, सहन कर जीवन की फिरौती कीमत चुकाया हो, और मानव जाति को पाप के चंगुल से मुक्त किया हो। इसलिए लगभग दो हजार साल पहले जब समय संपूर्ण हुआ तब मानव के पक्ष में मरने के लिए प्रभुओं के प्रभु पवित्र आत्मा की शक्ति से कुँवारी मरियम के गर्भ से यीशु मसीह के नाम से जन्मे ।

यीशु का जन्म बिना पाप के हुआ था। उन्होंने साढ़े तैंतीस वर्षों तक इस पृथ्वी पर पाप-मुक्त जीवन व्यतीत किया, और कोई भी यह स्थापित नहीं कर सका कि उनमें पाप था। वह सर्वशक्तिमान पाप रहित परमेश्वर हैं। वह अपने आप को शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया । और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।

यीशु मसीह में, परमेश्वर की संपूर्ण परिपूर्णता निवास करती है। वह अदृश्य परमेश्वर की छवि है, जो सारी सृष्टि में पहलौठा है। वह परमेश्वर की महिमा की चमक और उसके स्वभाव की सटीक छाप है, और वह अपनी शक्ति के शब्द से ब्रह्मांड को कायम रखता है। यीशु मसीह वह परमेश्वर है जिसके पास हमारे पापों को क्षमा करने का अधिकार है। वह हमारी

आराधना पाने के योग्य है। उसे अपना जीवन देने और उसे वापस लेने का अधिकार है।

एक महान बलिदान

यह माना जाता है कि खून बहाए बिना पापों का क्षमापन ओर प्रायश्चित नहीं होता। इसलिए, प्राचीन काल से ही अनेक धर्मों में बलिदान व यज्ञ आहुति किये जाते थे । न बैलों का खून न ही भेड़ों का खून मनुष्य को उसके पाप से मुक्ति दिला सकते है। वे सब केवल इस बात का संकेत हैं कि प्रभुओं के प्रभु प्रजापति, स्वयं मनुष्य बने और मानव जाति के मुक्ति के लिए एक महान बलिदान के रूप में अपना जीवन दान कर दिया और क्रूस पर खून बहाया।

यीशु मसीह तुम से बहुत प्यार कर रहा हैं। उसने तुम से प्यार किया और तुम्हारे लिए, तुम्हारे पापों, अधर्मो, अपराधों, और शापों का सहन कर खुद पर उठा लिया । वह तुम्हारा जगह लिया और तुम्हारे पक्ष में तुम्हारे लिए क्रूस पर लहू बहा कर मर गया। यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है।

क्रूस पर मुक्ति कार्य:

निश्चित रुप से, यीशु मसीह ने हमारी बीमारियों, दुर्बलताओं को क्रूस पर उठाया। उसने क्रूस पर हमारे कष्ट सहे। वह हमारे अपराधों के कारण घायल किया गया, और हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया। जिस सज़ा से हमें शांति मिली, वह उसी पर थी। उसके घावों से हम ठीक हो गए हैं। हम सभी का अधर्म यीशु पर डाला गया था। वह सताया और पीड़ित हुआ, तौभी उसने अपना मुंह न खोला । वह वध के लिये मेमने की नाई ले जाया गया, और ऊन कतरने के समय भेड़ की नाई चुप रहा । उत्पीड़न और न्याय के द्वारा, उसे हमारे पापों के लिए क्रूस पर वध के लिए ले जाया गया। उसने स्वयं को पाप के लिए बलिदान के रुप में सौंप दिया।

आपको स्वास्थ्य और उपचार दिलाने के लिए, वह घायल हो गया था। तुमको अमीर बनाने के लिए गरीब बन गये । आपको मुक्ति और धार्मिकता का वस्त्र पहनाने के लिए वह क्रूस पर नग्न हो गये। तुम्हें परमेश्वर का धर्मी बनाने के लिए, वह पाप बन गया। तुम्हें धन्य रखने के लिए, वह अभिशाप बन गया ।

यीशु नाम का अर्थ उद्धारकर्ता है। वाह अद्भुत, आश्चर्यजनक, उपदेशक, सामर्थी परमेश्वर, पिता – चिर अमर, और शांति का राजकुमार कहलाया जाता है। वह हमारे ही तरह हर प्रकार की परीक्षा को झेलकर भी पाप नही किया । इसलिए वह हमारे ज़रुरतों और परीक्षाओं में हमारी मदद कर सकते है। उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं है । वह हर परेशानी और तकलीफ को दूर कर देता है। येशु के नाम से दुष्टात्मा भाग जाते है।

वह तुम्हारा परमपिता है। वह तुम्हारे हर परिस्थिति को जानता है। यदि तुम उसकी ओर मुड़ेंगे तो वह अवश्य तुम्हारी सहायता करेगा। ऐसा कोई पाप नहीं है जिसे वह क्षमा नहीं कर सकता। तुम्हारा हर पाप बोझ और अपराध भावना को मिटाकर तुम्हें एक अच्छा विवेक चेतना प्रदान करेगा। ऐसी कोई व्याधि, बीमारी नहीं है जिसे वह ठीक नहीं कर सकता है। इस सारे संसार को यीशु ने केवल अपने मुँह से निकले हुये शब्द से बनाया है। निश्चित रूप से यीशु तुम्हारे हर बर्बादी, उजाड़ और निराशाजनक स्थिति से बचा सकताहै । वह तुम्हारे बिगड़े हुए घर को जोड सकता है।

खाली कब्र :

यीशु मसीह ने तुम्हारे लिए क्रूस पर अपना खून बहाकर अपना जान दिया; उसे दफनाया गया और वह तीसरे दिन पाप, मृत्यु, पाताल, शैतान की अंधकार शक्तियाँ, भ्रष्ट मनुष्य के पुराने स्वभाव को नष्ट कर के विजयी होकर फिर से जी उठा । मानव जाती के इतिहास में खाली कब्र वाला एकमात्र पुरुषोत्तम और पवित्र व्यक्ती - यीशु मसीह अपने महिमा तथा प्रभाव से खुद को परमेश्वर स्थापित किया। वह पवित्र और पाप रहित है, इसलिए उसे कब्र में बांधे रखना मौत को असंभव है।

केवल यीशु ही क्यों?

★ यीशु का जन्म और जीवन पाप रहित था।

★ यीशु के पास हमारे पापों को क्षमा करने का अधिकार है।

★ यीशु आराधना स्वीकार करने में सक्षम और योग्य हैं।

★ राक्षसों ने भी गवाही दी कि यीशु पवित्र है।

★ दुनिया के उद्धारकर्ता के बारे में पवित्र धर्मग्रंथों में लिखी गई तीन सौ से अधिक भविष्यवाणियाँ यीशु में पूरी हुईं।

★ यीशु एकमात्र (परमेश्वर और मनुष्य) हैं जो मानव जाति के मोक्ष के लिए और पापों से मुक्ति के लिए मरे ।

★ यीशु में, देवता की सारी परिपूर्णता शारीरिक रूप में निवास करती है। यीशु ने कहा, "मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूं, और मेरे बिना कोई मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता।"

★ यीशु इतिहास में निर्णायक व्यक्ति हैं। उनका जीवन कोई परी कथा नहीं हैं। उनका जन्म इतिहास के लिए एक संदर्भात्मक मील का पत्थर और आधार है, यहाँ तक कि युगों को ईसा पूर्व और ईस्वी में भी विभाजित किया गया है।

★ उनके प्रेम, क्षमाशील स्वभाव और शिक्षाओं ने कई लोगों का जीवन बदल दिया है - यहाँ तक कि पापियों का भी । (अपने शत्रु से प्रेम करो, उन लोगों के लिए प्रार्थना करो जो तुम पर अत्याचार करते हैं, अपना दूसरा गाल उन लोगों के सामने कर दो जो तुम पर हमला करते हैं ।)

★ यीशु ने सिखाया कि हर किसी को वरिष्ठ अधिकारियों के अधीन होना चाहिए, कि अधिकारियों के पास परमेश्वर द्वारा दिए गए अधिकार के अलावा कोई अधिकार नहीं है, अधिकारियों को परमेश्वर द्वारा नियुक्त किया जाता है, और जो कोई भी अधिकार का विरोध करता है वह परमेश्वर के कानून का विरोध करता है।

★ प्रभु यीशु मसीह ने आपको अपने नेताओं से प्यार करने और उनका सम्मान करने और उनके प्रति समर्पण करने और उनके लिए प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित किया।

★ मसीह ने हमें सबका आदर करने, अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करने, उन लोगों को क्षमा करने की आज्ञा दी है जिन्होंने तुम्हारे साथ अन्याय किया है।

★ यीशु मसीह ने इस बात पर जोर दिया कि सरकार को दिए जाने वाले करों का भुगतान समय पर और सही तरीके से किया जाना चाहिए - (ये उनकी कुछ शिक्षाएँ हैं जिन्हें अक्सर उद्धृत किया जाता है)

★ यीशु एकमात्र ऐसे व्यक्ति हैं जिनकी कब्र खाली है। इससे हमें आशा मिलती है कि वह उन लोगों को भी उठा सकता है जो उस पर विश्वास करते हैं और उन्हें मृत्यु और रसातल के चंगुल से बचाकर उठा सकते हैं।

धर्मशास्त्र के विधान का पालन करने से कोई भी व्यक्ती उसके नज़र में नेक नहीं ठहराया जा सकता है, क्यू की धर्मशास्त्र के द्वारा ही पाप की पहचान होती है। धर्मशास्त्र से अलग होकर परमेश्वर की धार्मिकता प्रकट होती है। अर्थात यह धार्मिकता यीशु मसीह पर विस्वास्ज़ादित उस पर यकीन करने वालों को प्राप्त होने वाली परमेश्वर की नीति है। इसीलिए विश्वासी यीशु के कृपा से और मसीह मैं बसी मुक्ति द्वारा बिना लागत के धर्मी ठहराए जायेंगे।

सभी का स्वागत है - यीशु ने कहा:

★ हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा ।

★ यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आकर पीए । जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, उसके पेट से जीवन के जल की नदियाँ बह निकलेंगी।

★ मैं निश्चित रुप से मेरे पास आने वाले किसी भी व्यक्ति को बाहर नहीं निकालूंगा ।

★ हे पृथ्वी के दूर दूर देशों के लोगो, मेरी ओर फिरो और उद्धार पाओ क्योंकि मैं हीं परमेश्वर हूं और कोई भी नही है |

★ मैं तुम्हें सजा देने या निंदा करने के लिए नही आया हूं बल्कि खोए हुए को ढूंड ने और उसको बचाने के लिए आया हु।

★ जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह मृत्यु से निकल कर जीवन में प्रवेश कर चुका है।

★ क्या यह हो सकता है कि कोई माता अपने दूधपिउवे बच्चे को भूल जाए और अपने जन्माए हुए लड़के पर दया न करे? हां, वह तो भूल सकती है, परन्तु मैं तुझे नहीं भूल सकता। देख, मैं ने तेरा चित्र हथेलियों पर खोदकर बनाया है।

★ मत डर, क्योंकि मैं तेरे संग हूं, इधर उधर मत ताक, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूं; मैं तुझे दृढ़ करूंगा और तेरी सहायता करूंगा।

परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबंध:

अपने सृष्टिकर्ता, अपने परमपिता जो परमेश्वर है उनके साथ एक व्यक्तिगत संबंध तुम बना सकते हो। वह परमेश्वर खुद को किसी से दूर रहने वाला नहीं हैं । यीशु मसीह पर विश्वास करने से तुम्हारे पाप माफ होकर उसके पुत्र बनने का अधिकार प्राप्त होगा । वह तुम से बात करने और तुम से बातें सुनने के लिए तरस रहा है।

आप जो भी हों, आप की जाति कुछ भी हो, आप का धर्म कोई भी हो, आप की आर्थिक स्थिति कैसे भी हो, आप कितने भी पापी हो, आप परमेश्वर के ही संतान हैं।

आप उसे बहुत प्रिय हो। आप उसके लिए अनमोल हैं क्योंकि उसने आपको अपने खून से खरीदा है। वह तुम्हें बहुत चाहता है। वह अपने घायल हाथों को फैलाकर आप का इंतजार कर रहा है। आप घुटने टेककर प्रार्थना करके, पवित्र बाइबल का पठन द्वारा परमेश्वर के साथ एक-से-एक रिश्ता बना सकते हैं। आपको अकेले रहने की जरुरत नहीं है। वह आपके साथ है । अपनी सारी चिंताएँ उस पर डाल दो। उसे आपकी चिंता है। वह आपकी हर परिस्थिति के लिए काफी है । वह न तो तुम्हारा त्याग करेगा और न ही कभी तुम्हें छोड़ेगा |

बचने के लिए मुझे क्या करना चाहिए:

अनन्त नरक की सज़ा से बचने के लिए, आपको अपने हृदय से भरोसा रखना चाहिए और:

★ स्वीकार करें और कबूल करें कि आप पापी हैं और आपने न केवल अपने विचारों से, बल्कि अपने शब्दों और कार्यों से भी पाप किया है।

- ★ महसूस करें कि आपको एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता है जो आपको मुक्ति / मोक्ष दे सके।
- ★ अपने मुँह से स्वीकार करें कि यीशु मसीह आपका व्यक्तिगत उद्धारकर्ता है और यीशु आपका प्रभु है
- ★ अपने दिल में विश्वास रखें कि यीशु ने आपके पापों के प्रायश्चित के लिए अपना खून बहाया और क्रूस पर मर गए । विश्वास करें कि यीशु आपके लिए मरा और दफनाया गया । मानो कि वह तीसरे दिन कब्र से उठ खड़ा हुआ और मृत्यु उसे रोक न सकी। जिन लोगों ने उसे ग्रहण किया, उन्हें वह परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार देता है।

अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते है वे मृत्यु से जीवन में प्रवेश करते हैं और मुक्ति प्राप्त करते हैं।

अगर यीशु मसीह को स्वीकार नहीं किया तो !

प्रत्येक मनुष्य के मरने के बाद, उसे धर्मी न्याय के लिए प्रभु यीशु मसीह के श्वेत सिंहासन के सामने खड़ा होना होगा । जिन लोगों ने यीशु मसीह को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया है और अपने पापों की क्षमा प्राप्त की है, उन्हें युगों-युगों तक प्रभु यीशु के साथ रहने के लिए अनन्त जीवन का आशीर्वाद मिलेगा | परन्तु यदि आप यीशु मसीह को अपने व्यक्तिगत उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार नहीं कर अपने पाप में बने रहते हैं और अपने पापों की क्षमा प्राप्त किए बिना मर जाते हैं, तो आप निश्चित रूप से एक दिन परमेश्वर के धर्मी न्याय के अधीन आएँगे क्योंकि आपने, यीशु मसीह की लहू से छुटकारा नहीं पाया है। यह शाश्वत नरक है। वहाँ आग बुझती नहीं और कीड़ा नहीं मरता ।

आपके जीवन में एक नया कार्य:

प्रिय मित्र ! इस पत्रिका के माध्यम से परमेश्वर स्वयं बोल रहे हैं। संसार की उत्पत्ति से पहले ही उसने तुम्हें प्रेम से चुना । उसने आपके जीवन में एक नया काम शुरू किया है। वह आपकी हालत को सुधार रहा है। वह तुम्हारे आंसू पोंछ रहा है। डरो मत, साहसी बनो। परमेश्वर तेरे पक्ष में है तो, तेरे विरुद्ध कौन हो सकता है। वह आपकी और आपके परिवार की रक्षा और संरक्षण करेगा। उनकी महिमा में आपकी हर इच्छा पूरी होगी। बस अपनी नजर उस पर केंद्रित रखो।

ये है शुभ समय :

यही सही उपयुक्त समय है। आज ही मोक्ष का दिन है। मनुष्य का जीवन बहुत अनिश्चितताओं से भरा है और एक क्षणभंगुर छाया और पानी की भाप की तरह है। पता नहीं चलता है की कब क्या होगा। कल हमारा नहीं है। यह कोई संयोग नहीं है कि यह पत्रिका आपके हाथ लग गयी। मेरे प्रिय मित्र, यीशु मसीह आपसे बहुत प्यार करता है। वह प्रेमपूर्वक आपको अपने शाश्वत साम्राज्य में आमंत्रित करता है। कृपया उसे मना न करे । उसके पवित्र प्रेम को मत ठुकराओ। वह दोनों हाथ फैलाकर आपका इंतजार कर रहा है। यीशु मसीह, जिसने आपको अनंत नरक से बचाने के लिए क्रूस पर अपना खून बहाया और आपके लिए अपना जीवन त्याग कर दिया, वह आपके लिए सब कुछ कर सकता है। वह आपकी मदद कर सकता है। वह आपके परिवार को सहायता कर सकता है। वह तुम्हें चंगा कर सकता है। वह अच्छी चीजों से संतुष्ट कर सकता है। वह तुम्हें बचा सकता है। यीशु मसीह आपके हृदय के द्वार पर खड़े होकर दस्तक दे रहे हैं। मेरे प्रिय मित्र! क्या आप दरवाज़ा खोलकर प्रभु यीशु मसीह को अपने हृदय में आमंत्रित करेंगे क्या? !

टिप्पणी:

यदि आप यीशु मसीह के बारे में अधिक जानकारी जानना चाहते हैं तो, आप गूगल प्ले स्टोर से बाइबिल ऐप डाउनलोड करके पढ़ सकते हैं। पवित्र आत्मा के द्वारा लिखित और दुनिया के अनेक भाषाओं में अनुवादित किया गया परमेश्वर की पवित्र पुस्तक बाइबिल को पढ़कर प्रभु यीशु मसीह के प्रेम का स्वाद ले सकते हैं और जान सकते हैं।

एक समय की बात है कि एक राजा था। जिसने अपने हराम की खिड़की से एक संत को देखा और उसे बुलाया और उसे उसका नाम, शिक्षा, संपत्ति और नौकरी के बारे में पूछा। तब संत ने कहा कि उसके पास इनमें से कुछ भी नहीं है। तब राजा ने सबके सामने उस संत का अपमान करके एक शॉल उड़ाकर मेरे राज्य में इससे बेवकूफ व्यक्ति कोई नहीं है कहकर उसका मजाक उड़ा के भेज दिया। कुछ दिनों बाद संत को पता चलता है कि राजा को एक लाइलाज बीमारी की वजह से मृत्यु शय्या पर है। और वह राजा के पास आकर कहता है कि, राजा ! मैंने सुना है कि आप कुछ दिनों में मर जाओगे तो क्या आपको पता है कि आप कहां जा रहे हैं और कब लौटेंगे। क्या आपने यात्रा की सब तैयारी कर ली। राजा ने कहा मुझे नहीं पता कि मैं कहां जा रहा हूं। मैं तैयार नहीं हूं। तब संत ने कहा हे राजा अगर हम एक दिन के लिए पड़ोसी गांव जाते हैं तो हम तैयारी करके जाते हैं ना ? तो आप अब ऐसी दुनिया में जा रहे हैं जहां से वापस आना संभव नहीं है फिर भी आपने कुछ भी तैयारी नहीं की है । अब तो आप ही सबसे मूर्ख और बेवकूफ व्यक्ति हो, कहकर वह शॉल राजा को ओढ़ कर चले जाता है। क्या आप तैयार हो मेरे दोस्त ??